आम नागरिक की बिजली छीनना ही इन सुधारों का मकसद है? कहीं सुधारों के चक्कर में मध्य प्रदेश विद्युत मंडल की पुरानी जमी-जमाई व्यवस्था को भी तो नष्ट नहीं किया जा रहा है? प्रदेश की बिजली को लोकतांत्रिक राजनीति से परे करने वाले इन सुधारों के पीछे कहीं गहरी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति तो नहीं है?

उड़ीसा में बिजली सुधारों के विनाशकारी अनुभव के बाद मध्यप्रदेश के बिजली सुधारों ने फिर ये गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, जिनका जवाब म.प्र. विद्युत मंडल और मध्य प्रदेश सरकार में बैठे उच्च पदस्थ कर्णधारों को और 'सुधार' के समर्थकों को देना होगा। प्रदेश की जनता के लिए इन सवालों के जवाब ढूंढने का वक्त आ गया है।

(स्रोत फीचर्स)

विज्ञान समाचार

एक पूरा डायनासौर मिला है चट्टान में

पिछले वर्षों में डायनासौर की जितनी धूम थी अब नहीं है। मगर हाल ही में एक डायनासौर का समूचा जीवाश्म मिला है। यह इतना संपूर्ण है कि वैज्ञानिक इसे डायनासौर की 'ममी' कह रहे हैं। मिला तो वैसे यह दो साल पहले था मगर इसकी पूर्णता अब प्रकट हुई है।

यह एक हैड्रोसौर का बच्चा है जो शाकाहारी था। करीब 7.7 करोड़ वर्ष पूर्व मरने के बाद यह गीली रेत में धंस गया जहां अनॉक्सी बैक्टीरिया ने धीरे-धीरे इसके सारे अंगों को चट्टान में बदल डाला। मगर यह काम उन्होंने इस खूबी से किया कि डायनासौर की चमड़ी, हड्डियां, आंतें वगैरह सब ज्यों के त्यों जीवाश्म में बदल गए।

आम तौर पर डायनासौर के जो जीवाश्म मिलते हैं वे टुकड़े-टुकड़े में मिलते हैं। चमड़ी वगैरह सहित कोई नमूना मुश्किल से मिलता है। आज तक तीन ही ऐसे पूरे जीवाश्म मिले हैं। ये तीनों ही करीब 70 साल पहले मिले थे। मगर उस समय चट्टानों में से इन्हें अलग करने की तकनीक बहुत विकसित नहीं थी। उन तीन में से भी एक तो अटलांटिक सागर में डूब चुका है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उसे ढो रही नौका ही डूब गई थी।

ताज़ा जीवाश्म एक 6 टन की चट्टान में धंसा है। इसे मोन्टाना के फिलिप्स काउन्टी संग्रहालय में लाकर साफ सफाई का काम चल रहा है। 2 वर्ष में इतनी सफाई हो पाई है कि उसकी गले की रचना और कंधे की पेशियां नज़र आने लगी हैं।

बताया जा रहा है कि उसके पैरों के तलुओं की गद्दियां, चोंच और पीठ की झालर भी सुरक्षित है। यहां तक कि उसके पेट में उसका अंतिम भोजन भी संरक्षित पड़ा है। इसमें वनस्पति अवशेष साफ नज़र आ रहे हैं। यह शायद पहली बार है कि डायनासौर का भोजन देखा गया है। सबसे रोचक बात यह है कि आंतों का माल पत्थर नहीं बना है। वैज्ञानिकों ने इसमें 40 अलग-अलग वनस्पतियों के परागकण पहचानने की बात कही है। इस काम में जुटे मार्क थॉमसन का कहना है कि ये उसके अंतिम भोजन के ही अंश हैं।

जिस गति से यह काम चल रहा है उसे देखते हुए पूरा चित्र साफ होते-होते अभी दो साल और लगेंगे। थॉमसन का कहना है कि इससे डायनासौर के जीवन को समझने में बहुत मदद मिलेगी। *(स्रोत फीचर्स)*